परम्परा

प्रो. अश्विनी केशरवानी

छत्तीसगढ़ का जगन्नाथ धाम शिवरीनारायण

स्कंदपुराण में भगवान नर नारायण की तपस्थली बद्रीनाथ को माना गया है, लेकिन शिवरीनारायण में भगवान नर नारायण का गुप्तवास है। यहां वे नील माधव के रूप में शबर विश्ववसु से पूजित होते रहे और पुरी जाकर भगवान जगन्नाथ कहलाए। पुरी के जगन्नाथ मंदिर की तरह शिवरीनारायण का शबरीनारायण मंदिर भी तांत्रिकों के कब्जे में था, जिसे आदि गुरु शंकराचार्य और आदि गुरु दया राम ने क्रमशः पुरी और शिवरीनारायण के मंदिर को तांत्रिकों के कब्जे से मुक्त करा कर वैष्णव पीठ की स्थापना की थी। पुरी की तरह यहां भी एक गादी चौरा है जहां पर आदि गुरु दयाराम दास का तांत्रिकों से शास्त्रार्थ हुआ था। प्रति वर्ष माघ पूर्णिमा से यहां वृहद मेला का आयोजन होता है, जो महाशिवरात्रि तक लगता है। इस मेले में हजारों लाखों दर्शनार्थी भगवान शबरी नारायण के दर्शन करने जमीन में लोट मारते आते हैं। ऐसी मान्यता है कि इस दिन भगवान जगन्नाथ यहां विराजते हैं और पुरी के भगवान जगन्नाथ के मंदिर का पट बंद रहता है। इस दिन उनका दर्शन मोक्षदाई होता है। इसी कारण शिवरीनारायण को छत्तीसगढ़ का जगन्नाथ धाम कहा जाता है।

लोक साहित्य

श्यामा सिंह

स्वतंत्रता पूर्व का काव्य साहित्य

नरसिंह दास वैष्णव रचित शिवायन (1904 ई) छत्तीसगढ़ी की प्रथम रचना मानी जाती है, इसमें शिवजी की स्तुति कवित्त और सवैया छंद में की गई है। प. लोचन प्रसाद पाण्डेय रचित वेदना गीत (1909ई) में छत्तीसगढ़ का जयगान है, प. शुक्लाल प्रसाद पाण्डेय रचित गीया (सन 1918 ई प्रथम बाल साहित्य) जगन्नाथ प्रसाद भानु रचित मातेश्वरी गुटका, छत्तीसगढ़ी जस गीत (लोकगीत संग्रह) पुरुषोत्तम लाल रचित कांग्रेस आल्हा (1930 ई) गिरिवर दास वैष्णव रचित छत्तीसगढ़ी सुराज (सन 1935 ई) समाजवादी विचारधारा की कविता है। जैसे -

पराधीनता के बेड़ी बस, ओहि दिन पहरा देइस।
अपन दुख ला हमला देके, हमर सुख ले लेइस।

बोधि सिंह प्रेम रचित कोईलारी दर्शन (1937 ई) महत्वपूर्ण कृति है। जैसे-

होइस जब ले राज, अंग्रेजी सरकार के,
खुले हजारों काज, बढ़त है नित प्रति।
छत्तीसगढ़ के गोठ मा, कोइलारी के हाल,
बिगडे बने सुधरिहा, छत्तीसगढ़िया लाल।

द्वारिका प्रसाद तिवारी विप्र रचित कुछु काही, सुराज गीत, राम आऊ केवट संवाद, फागुन गीत प्रमुख कविता संग्रह, पंचवर्षीय योजन गीत और धमनी हाट। जैसे -

तोला देखे रहेंव गा, तोला देखे रहेंव रे,
धमनी के हाट मा बोईर तरी रे,
लकर धकर आए जोही , आंखी ल मटकाए,
कईसे जादू करे मोला, सुक्खा म रिझाए।

किशनलाल छोटे रचित लड़ाई के गीत और गीता उपदेश में श्रीमद भगवत गीता के उपदेश का छत्तीसगढ़ी में अभिव्यक्ति प्रदान करने का सार्थक प्रयास है -

अपन बराबरी सबला समझे, ककरो नहीं करे निखार।
छोटे बड़े आऊ ऊंच नीच के, जेखर मेरे न रहे करार।

इसी के साथ ही अनेक रचनाकारों में कुंज बिहारी चौबे, कोदूराम दलित, लाला जगदलपुरी, रंजन लाल पाठक, विमल कुमार पाठक, प्यारे लाल गुप्त, दानेश्वर शर्मा, गया राम साहू, केयूर भूषण, कपिलनाथ कश्यप, सीताराम शर्मा, जमुना प्रसाद कसार, मुकुंद कौशल, बाबूलाल सरिया, डा नरेन्द्र देव वर्मा, हेमनाथ यदु, नारायण लाल परमार, माखन लाल गुप्त के अलावा और भी कई नामों की लंबी श्रृंखला है।

कला जगत

डा कावेरी दामड़कर

मुकुटधर पाण्डेय की संगीत साधना

प. मुकुटधर पाण्डेय जी की कविता सहज रूप से संगीतात्मकता को स्वीकार करती है। इसका एक कारण उनके परिवार में जहां संगीतप्रियता है, वहीं उनके काव्य में गीति के रूपांतरण दृष्टि की भी प्रतीति है। इनकी गीति रचनाओं में प्रकृति की विविध रंगी छटा, मातृभूमि और उसके परिवेश को चित्रित करने में विशेष दक्षता रखती है। यही कारण है कि छत्तीसगढ़ के लोक जीवन, लोक संगीत की छटा उनके काव्य में यत्र तत्र प्रतिफलित है। इसके साथ ही काव्याभिव्यक्ति के उपक्रम में संगीतमय शब्द न केवल माधुर्य का सृजन करते हैं, वरन आध्यात्मिकता को भी आधार देते हैं। प. जी की कविताओं में महानदी की कल कल ध्वनि युक्त संगीत का बहाव दृष्टिगत होता है। उनकी कविताओं में संगीत रचा बसा है। संगीत के सभी शास्त्रीय पक्षों में से अनेक तत्व विभिन्न आयामों में उनके काव्य प्रयुक्त हुए हैं। उनका संपूर्ण काव्य प्रकृतिमयी रागात्मक संगीत बन गया है। इनकी कविताओं में संगीत का वैविध्य है। कभी संगीत सांध्यबेला की निरवता में सुनाई देने वाली ध्वनि है तो कभी भोर का स्वागत गीत। इनके लिए गीत तो हृदय की आग है, जागृत राग है इसलिए यह मन की जीत और हृदय की पावन पुनीत स्थिति की अभिव्यक्ति है -

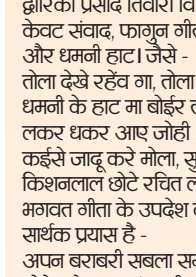

गीत लगा देता है उर में आग।
गीत जगा देता है उर में आग।।
गीत एक लेता है मन को जीत।
गीत एक देता है हृदय पुनीत।।

स्वर, लय, ताल और वाद्य वृंद उनकी कविताओं में परिलक्षित है। मुरली का निनाद हो, या सितार की झंकार या लहरों का नृत्य हो, पाण्डेय जी की कविताओं में संगीत के तीनों पक्ष गायन, वादन और नृत्य का सुंदर समागम है, यथा -

चलती हवा है ठंडी, हिलती है डालिया सब।
बागों में गीत सुंदर गाती हैं मालिनें अब।
करते हैं नृत्य वन में देखो ये मोर सारे।
मेंढक लुभा रहे हैं गाकर सुगीत प्यारे।

मुकुटधर पाण्डेय जी के काव्य में शास्त्रीयता का पुट यद्यपि अल्प है तथापि संगीत के विभिन्न तत्वों का सटीक प्रयोग उनकी सांगीतिक अभिरुचि को प्रकट करता है।

माता पहुंचनी का त्योहार पर्यावरण से मनुष्य के रिश्ते को मजबूत बनाए रखने, पर्यावरण को स्वच्छ रखने हेतु तथा सामाजिक उपादेयता के हित में वैज्ञानिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण माना जाता है। माता पहुंचनी में शीतला माता की पूजा की जाती है और विश्वास किया जाता है कि इस दिन ठंडई लेने से चेचक की बीमारी नहीं होती ।

पर्यावरण संरक्षण का भाव माता पहुंचनी में

संस्कृतिः डा. ज्योति किरण चंद्राकर

माता पहुंचनी का पर्व आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष में क्षेत्रियता के अनुसार सोमवार या गुरुवार को किया जाता है। इस दिन शीतला माता मंदिर में माता शीतला की विशेष पूजा अर्चना की जाती है, जो कि बैगा द्वारा गांव के सभी जाति के लोगों साथ मिलकर सामुदायिक रूप से की जाती है।

माता शीतला को नीम की पत्तियों से जल स्नान कराकर माता का संपूर्ण श्रृंगार किया जाता है । यह कार्य गांव या शहर में अधिकृत बैगा द्वारा ही किया जाता है। शीतला माता को ठंडा भोग चढ़ाया जाता है। ठंडा भोग में भीगा हुआ चना और चना दाल भोग लगाया जाता है।

ग्रामीण अंचल में निवासरत सभी जाति के लोग माता पहुंचनी के दिन शीतला माता की ठंडई लेने शीतला माता की मंदिर चढ़ावा लेकर जाते हैं। चढ़ावा यथाशक्ति अनुसार दी जाती है। प्रसाद के रूप में नारियल और चना दाल भिगाकर ले जाया जाता है। लोक मानस में मान्यता प्रचलित है कि शीतला माता की पूजा करने व ठंडई लेने से चेचक की व्याधि समाप्त हो जाती है। साथ ही चर्म रोगों का निदान होता है। ठंडई के लिए नीम पत्ती को हल्दी युक्त पानी में डाल करके रखा जाता है, उस पानी को सबके ऊपर छिड़का जाता है।

शीतला माता में चढ़ाया हुआ ठंडई घर लाया जाता है और उसे घर के सभी लोगों के ऊपर छिड़का जाता है।

वर्तमान समय में भी माता पहुंचनी का त्यौहार सामुदायिक रूप से ग्रामीण अंचल में किया जाता है। ठंडई लेने की प्रथा अभी तक प्रचलित है।

परब विशेषः ध्रुव सिंह ठाकुर कोटमिहा

पुरी ले छत्तीसगढ़ तक के यात्रा

आषाढ़ शुक्ल पक्ष दुतिया के दिन रथदुतिया के दिन भगवान जगन्नाथ, भाई बलराम अऊ सुभद्रा मईया ल रथ म बउठा के गांव शहर में घुमा के पूजा करे जाथे।

पुरी के गणपति राजा ह सपना देखिस भगवान जगन्नाथ अपन भाई बलभद्र अऊ बाहिनी सुभद्रा संग बईठे हे अऊ कहत हे कलजुग में हमर इही रूप ह मनखे मन ल तारही। बिहानिया गणपति राजा ह समुंदर में तऊरत रीहिस। राजा ह वोला निकलवा के तीनों भगवान के मूर्ति बनवाइस आऊ बड़का मंदिर बनवा के पूजा करीस। वो मूर्ति ह कलजुग के मंखे मन ल तारत रीहिस आऊ हमर चार धाम के एक धाम बनगे। जब हमर देश में आन देश के मन हमला करीन आऊ वो मन हमर मंदिर आऊ मूर्ति ल टोरत गिन, तब एक झन ह जगन्नाथ के मूर्ति ल लुका के शिवरीनारायण के मंदिर में लुका के पूजा करत रीहिस। समे बदलीस आऊ फेर राजा मन मूर्ति ल पूरी के मंदिर म बइठा दिन आऊ आज तक भगवान जगन्नाथ के पूरी म पूजा होथे।साल में एक दिन पूरी म भगवान के पूजा नई होय आऊ न महाप्रसाद के भोग चढ़य। वो दिन जगन्नाथ भगवान के पूजा आऊ भोग शिवरीनारायण में चढ़ थे। पुरी ले जगन्नाथ के पूजा महानदी के तीरे तीर छत्तीसगढ़ तक पहुंचगे। छत्तीसगढ़ के हर गांव में रजुतीया के दिन रथ में भगवान भईया बलभद्र अऊ सुभद्रा के मूर्ति के पूजा करके रथ निकाले जाथे। आऊ गांव शहर के मनखे मन ढकेलत ढकेलत पूरा गांव आऊ शहर में घुमाथे आऊ तीनों भगवान के जय जय कार करत लाई, मूंग, आमा, जामुन, नरियर के परसाद चढ़ाथे आऊ झोंकके खाथे। जेन ह रथ ल ढकेलथे तेन ह अपन जीवन ल सुफल समझथे। रजुतिया ह छत्तीसगढ़िया मन के प्रमुख तिहार आय।

पुस्तक समीक्षा

टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'

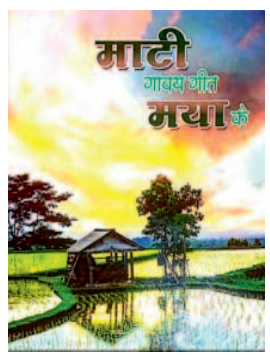

कृति- माटी गावय गीत मया के (छत्तीसगढ़ी गीत संग्रह)
कृतिकार -शिवकुमार अंगारे
समीक्षक -टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'
प्रकाशक - राघवेन्द्र प्रकाशन, पैरी (बालोद)
संस्करण- प्रथम, मार्च 2025.
कीमत- दू सौ रुपिया

साहित्य के बड़ सुग्घर लोकप्रिय विधा आय गीत। गीत सृजन के अंतर्गत शिवकुमार अंगारे जी छत्तीसगढ़ के एक सशक्त गीतकार आय। अपन पहली छत्तीसगढ़ी काव्य संकलन ''माटी गावय गीत मया के'' ल ज्ञानदायिनी मां सरस्वती के वंदना श्रीगणेश करे हे। संकलन म मानव देह के नश्वरता अउ भक्ति ल मोक्ष प्राप्ति के साधन बताय हे। ज्ञान के रूपी प्रकाश के प्रति सजग कवि प्रकृति चित्रण, पर्यावरण सुरक्षा, किसान के श्रम के महत्व जइसे आवश्यक गोठ गोठियाय हे। समानता, राष्ट्रीय एकता अउ आशावाद के भावना अंगारे जी रचना मन म देखे बर मिलथे। घाम-घरी, दीया के अंजोर, बेटी ल सनमान देव, पानी ले जिनगानी, साक्षारता के अंजोर संदेशपरक रचना आय। रचना मन म उपमा अलंकार के बहुतायत हे। हिरदय के मया-पिरीत ल अपन श्रृंगारिक रचना मन म रखे हे। ठेठ छत्तीसगढ़ी के किसिम-किसिम के शब्द के संगे-संग मुहावरा अउ हाना के घलो सुग्घर प्रयोग करे हे। कवि लिखथे -

'लबरा के नौ नांगर, आज ले जोतात हे।
जेकर हाथ लउठी उही, भइसी ले जात हे।'

लेखकों से..

छत्तीसगढ़ की लोक कला, लोक साहित्य, पर्यटन, तीज त्योहार, गांव की कहानी, ऐतिहासिक, पुरातात्विक, शैलचित्र, भित्तिचित्र, कला कृति और पुरखा के सुरता के साथ ही सम सामयिक विषयों पर अधिकतम 500 शब्दों पर लेख भेजें- **Choupalharibhoomi@gmail.com**

सदैव याद किए जाएंगे जस गीतों के सर्जक मौनी बाबा

सुरता

रामेश्वर सिंह चंदेल

कालजई जस गीतों के रचनाकार जमुना प्रसाद मिश्र को मौनी बाबा के नाम से जाना जाता था। आप प्रसिद्द लोक गीतकार और साहित्यकार बद्रीविशाल परमानंद को अपना गुरु मानते थे। इसके साथ ही वरिष्ठ साहित्यकार और कलाकार स्वर्ण कुमार साहू, परमानंद कठोलिया तथा रामधीन सोनकर का सानिध्य भी आपको मिला।

राजनांदगांव के जमात पारा में कलाकारों की टोली जमती थी। जिसमें युवा से लेकर वरिष्ठ कलाकार शामिल होते थे। इनमें आपकी टीम भी शामिल होती थी। दूर दूर तक कार्यक्रम के लिए आपकी टीम को आमंत्रण मिलता रहता। कई मंचों में अच्छी प्रस्तुति के लिए पुरस्कृत भी होते रहे।

आपने अपने जीवन का अधिकांश समय मैहर के शारदा माता मंदिर और राजनांदगांव स्थित मोहारा के शारदा माता मंदिर में बिताया। रियासतकालीन इस सिद्धपीठ शीतला मंदिर बूढ़ा सागर के पुजारी और उनका पूरा परिवार जस, भजन और फाग गीत गायन में विशेष रुचि रखते थे। साथ ही इनका पूरा परिवार संगीत की सभी विधाओं को आत्मसात करते थे। इस परिवार का संपर्क मौनी बाबा और उनके परिवार से रहा। इस तरह दोनों परिवार गायन और वादन में दक्षता हासिल कर अपनी प्रतिभा को जन समक्ष लाते रहे। इसमें मौनी बाबा की अलग विशेषता रही कि वे जस पचरा लेखन भी करते थे। मौनी बाबा की सात्विकता की झलक स्पष्ट नजर आती थी। अपने में लगे रहने वाले

इस कला जगत के व्यक्ति का रहन सहन, खानपान और वेशभूषा भी सादगी से भरा रहा।

यदि शहर में किसी की मृत्यु हो जाती तो मृतक के घर से मुक्तिधाम तक काया खंडी भजन के साथ विदाई देते थे।

आपके सहयोगी कलाकारों में मोहन गौतम, भगवती यादव, ईश्वरी यादव, मदन पाल, मेहत्तरू राम सिंहा, रामस्वरूप यादव, नकछेद यादव और महेश यादव जैसे कलाकारों की टोली को आज भी स्मरण किया जाता है। आपकी नई मानय काली कतरो मनावव.... जैसे कालजई जसजीत का आज भी गायन होता रहता है, इस गायन को सुनकर मौनी बाबा की तस्वीर चेहरे पर झलक उठती है।